प्रेम में होना

राजीव कुमार 'त्रिगर्ती'

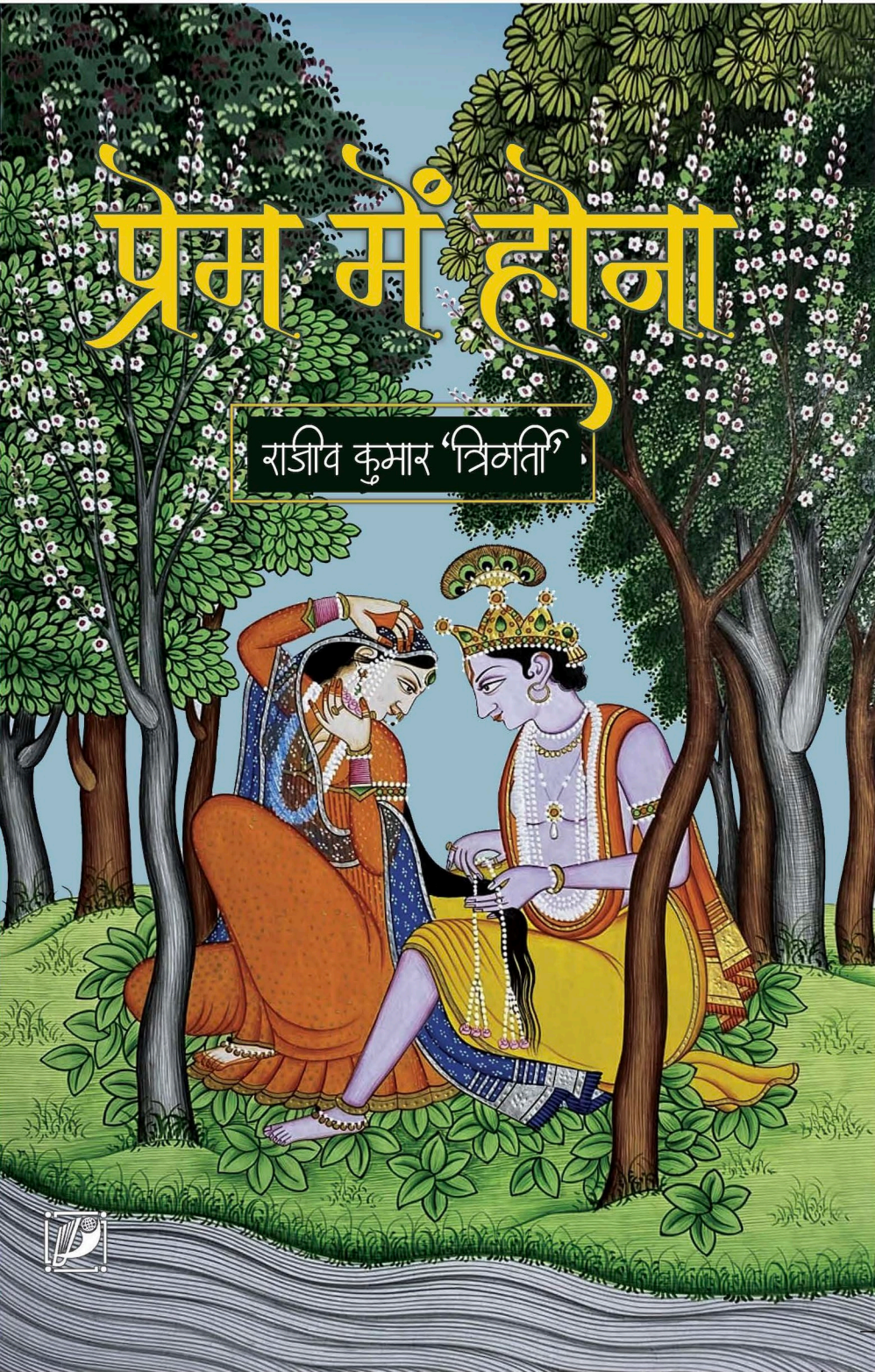

राजीव कुमार 'त्रिगर्ती'

1975 में हिमाचल प्रदेश में बैजनाथ के निकट जण्डपुर गाँव में जन्म।

पैतृक गाँव लंघू (बैजनाथ) तथा निकटवर्ती
राजकीय विद्यालयों में प्रारम्भिक शिक्षा।
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से उच्च शिक्षा।

सम्प्रतिः अध्यापन।

अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर कविताएँ, व्यंग्य, लघुकथाएँ और कहानियाँ प्रकाशित।

उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद से 2008 में 'गूलर का फूल' कविता संग्रह प्रकाशित।

शशि प्रकाशन, सुपौल (बिहार) से 2020 में 'ज़मीन पर होने की खुशी' कविता संग्रह प्रकाशित।

सम्पर्कः rajeevtrigarti@gmail.com | मोबाइलः +91-9418193024

Cover Design by : The Creativeart

₹ 205/-

ISBN 978-81-969712-0-5
ISBN 819697120-6
9 788196 971205

पी पी पब्लिशिंग, इंडिया

प्रेम में होना

सृष्टि के समग्र सदाकर्षण के लिए

प्रेम में होना

राजीव कुमार 'त्रिगर्ती'

पी. पी. पब्लिशिंग, भारत

ISBN 978-81-9697120-5

पहला संस्करण : 2024 (*शक* 1945)

© लेखकाधीन

Prem Mein Hona (*Hindi Original*)

₹ 205.00

पी. पी. पब्लिशिंग, भारत

3/186 राजेंद्र नगर, सेक्टर-2, साहिबाबाद,
गाजियाबाद 201005 द्वारा प्रकाशित।

आवरण पेंटिंग - **पूनम कटोच**

टाईपसेटिंग - **नूतन ग्राफिक्स,** साहिबाबाद

www.pppublishingindia.press

अनुक्रम

	भूमिका	IX
1.	मदनोत्सव	1
2.	मेरे लिए	2
3.	प्यार जताने के लिए	3
4.	मैं भूल ही जाता हूँ	5
5.	मेरे हिस्से का प्यार	6
6.	मैंने चाहा ही ऐसा	7
7.	मेरे भीतर तुम्हारा अस्तित्व	9
8.	जागृत प्रेम	10
9.	मेरी अनुभूतियों में तुम	12
10.	मुझमें मेरे होने जैसी	14
11.	आओ ऐसे जीते हैं	16
12.	तुम्हारे सिवा	17
13.	किसी एक दिन	18
14.	अनन्तकाल तक प्रेम के लिए	20
15.	मुझे लगता है	21
16.	फुर्सत में तुम्हारा चेहरा	23
17.	सन्देश की मृत्यु पर वक्तव्य	24
18.	कल्पना से यथार्थ तक	25
19.	उम्मीद नहीं हारता	26
20.	प्रेम-बोध	27
21.	प्रेम	28

22. किया जाता रहे चुपचाप 29
23. प्रेम में होना 31
24. प्रेम में 33
25. समय आने पर 35
26. भीतर बसे हुए 36
27. प्रेम रहेगा वर्तमान 37
28 प्यार के लिए ज़रूरी है 38
29. लौट आया है वक्त 40
30. प्रेम व्यापक है 41
31. ख़ुशी की बात 43
32. प्रेम ही है प्रसरित 44
33. चुपचाप 45
34. एक-दूसरे के नमक में 46
35. भूलने की कोशिश में 47
36. पता है 48
37. शान्ति की पहल के लिए 49
38. तुम और मैं : आर-पार 51
39. प्यार बस प्यार 52
40. पीडा प्रतीक्षारत है 54
41. सहज वसन्त की चाह में 56
42. तुम्हारा ख़्याल 58
43. सच में भयावह है 59
44. मैं तैयार हूँ 60
45. तुम्हारी चाहत के सिवा 62
46. हदों के पार 63
47. कहने-होने को 64
48. एक-दूसरे के लिए हम 65
49. मेरी चाह 67
50. आँख में बसी लड़की 68
51. एक हसीन लड़की की शोख़ नज़र 69

52. डुबका लो मुझे 70
53. जो मेरे लिए नहीं हो तुम 71
54. तुम्हें देखने के बाद 72
55. सोचना तो 74
56. तुम्हारी अनुभूतियों में 76
57. तुम्हारा आभास 78
58. तुम्हारे प्यार के रंग में 80
59. तुम्हारी यादों का रास्ता 82
60. प्रेम होने पर 83
61. तुम्हारी क्षमता 84
62. और चाहिए भी क्या 85
63. तुमसे लगाई उम्मीदों पर स्पष्टीकरण 86
64. प्यार बढ़ रहा है 87
65. तुम्हारे प्यार के कारण 88
66. तुम्हारी साँसों की सुगंध 89
67. तुम अगर चाहो तो 91
68. मैं जानना चाहता हूँ 93
69. हिचकी 95
70. हमारे उच्छ्वास 96
71. तृप्ति का चरम बनकर 97
72. जब से बंधी है आस 98
73. कवि चाहता है 99
74. लिख रहा हूँ कुछ अच्छी कविताएँ 100
75. प्रेम कविताएँ 102
76. कविता से भेंट 103
77. ढाल रहा हूँ तुम्हें प्रेम कविताओं में 104
78. कविता का सच 106
79. मेरी कविता जवां हो रही है 107
80. अपने-अपने वक़्त 108
81. मेरी प्रेमिका 109

भूमिका

हिमाचल से निकली काव्य सलिलाओं में एक मधुर ध्वनि राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की है जो समकालीन हिंदी कविता में विगत तीन दशकों से अनवरत गुंजायमान है। जब 2008 में उनका पहला काव्य संग्रह 'गूलर का फूल' आया था तब हिंदी कविता में पहाड़ों से उतरे इस कवि ने अपनी ताज़गी और सादगी के साथ आमद दी थी। फिर 2020 में उनका दूसरा संग्रह 'ज़मीन पर होने की खुशी' आया जिसमें वे अपनी जनपक्षधरता, समकालीन चिंताओं और उम्मीदों की ज़मीन पर मजबूती से खड़े नजर आते हैं। इन दोनों संग्रहों के दरमियान राजीव 'त्रिगर्ती' की कविता अपनी शैली, दृष्टि और कहन में परिपक्व होती दिखाई देती है। स्थानीयता के बोध से संपृक्त उनकी कविताओं में कहन का सादापन और ईमानदारी है जो उन्हें कवि कर्म में स्थायित्व प्रदान करता है। कविता के इस रचनात्मक स्थायित्व में जो चीज़ नहीं बदलती वह है उनका कवि जो भाव संवेदना से संपृक्त है। तीन दशकों की कविता यात्रा में इस तरह का परिवर्तन जिसमें कवि की भूमि यथावत रहे पर जो बदलते समय को दर्ज करता भी चले, महत्त्वपूर्ण है।

राजीव अपनी लोकोन्मुख और जनपक्षधर कविताओं के मूल में प्रेम के कवि हैं। प्रेम की वजह से ही वह उन चिंताओं तक पहुँच पाते हैं जिनकी वजह से प्रेम घटता है, छीजता है। किसी कवि के लिए सबसे पहले प्रेमी होना एक अनिवार्य शर्त है जिसे राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' पूरा करते हैं और अपने इस तीसरे कविता संग्रह में वे अपने उसी प्रेमी रूप में प्रस्तुत हो रहे हैं। यहां राजीव की प्रेम कविताएं पूरी तरह निजी और एकनिष्ठ दिखाई देती हैं। भावसघन संवेदना वाली यह कविताएं किसी साधक के ध्यानमग्न होने जैसी प्रतीत होती हैं। कवि राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' कांगड़ा, हिमाचल से आते हैं इसलिए उनकी इन कविताओं को पढ़ते हुए पाठक का मन प्रेमिल होता हुआ पहाड़ों में गुम होने लगता है। कविता से एकाकार होने की यह प्रक्रिया निजता के स्तर पर निश्चित ही अनूठी जान पड़ती है।

प्रेम में रची पगी इन कविताओं में 'सुन्नी – भुंकू', 'चंचलो – कुंजू', 'फुलमू – रांझू' जैसे स्थानीय प्रेमाख्यानों के नायक-नायिका हिंदी कविता में सम्भवतः पहली बार दिखाई देंगे। प्रेम कविताओं में इनकी उपस्थिति हिंदी कविता में प्रेम के प्रतीकों का वितान विस्तृत

करेगी। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की इन कविताओं में प्रेम किसी अपेक्षा में नहीं दिखाई देता। प्रेम के सघन भावलोक में कहीं कहीं यह एकालाप प्रतीत होता है जिसमें किसी तरह की कोई चाहना नहीं है। अपनी इस विशेषता के कारण मन का एक ऐसा अधूरापन हमारे सामने प्रस्तुत होता है जिसमें प्रेम की पूर्णता है। प्रकृति संबद्ध दृश्यों और कहीं – कहीं भाषा में तत्समता के कारण यह कविताएं हिंदी के छायावादी युग की याद दिलाती हैं। राजीव की यह कविताएं विशुद्ध प्रेम कविताएं हैं जिनमें रमकर पाठक का हृदय प्रेमिल हो जाता है। प्रेम की यह निजता अपने केंद्र से विस्तृत होकर सकल संसार को प्रेमिल बनाये, यह कामना है। इन प्रेमसिक्त कविताओं के रचन के लिए राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' को शुभकामनाएं।

पीयूष कुमार
बागबाहरा, छत्तीसगढ़
22 जनवरी 2024